नृत्य कुचिपुड़ी –कोड 058
अंकन योजना
कक्षा -XII (2025-26)

समय – 2 घंटे **अधिकतम अंक – 30**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 15 प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प शामिल हैं।
- **खंड- क** में 8 प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिनमें प्रत्येक 1 अंक का है।
- **खंड- ख** में 5 प्रश्न छोटे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 2 अंक का है।
- **खंड- ग** में 2 प्रश्न लंबे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 6 अंक का है।

प्रश्न	खंड-क	अंक
1.	**C**	1
2.	**D**	1
3.	**A**	1
4.	**C**	1
5.	**B**	1
6.	**B**	1
7.	**B**	1
8.	**C**	1
	खंड-ख	
9.	**श्लोक:** "आंगिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्व वांग्मयं। आहार्यं चंद्र तारादि तं वन्दे सात्त्विकं शिवम्॥" **अर्थ:** "जिसकी काया समस्त ब्रह्मांड है, जिसकी वाणी समस्त भाषाओं का सार है, जिसके आभूषण चंद्रमा और तारे हैं, हम उस दयालु एवं शुद्ध शिव को नमन करते हैं।" **या**	2

	आहार्याभिनय के प्रकार 1. **पुस्त** – लकड़ी, कपड़े, या बांस जैसे सामग्रियों का उपयोग कर प्रतीकात्मक प्रस्तुतियाँ बनाना। 2. **अलंकार** – फूलों, आभूषणों और अन्य सजावटों का उपयोग करके नृत्य के भाव और सौंदर्य को बढ़ाना। 3. **अंगरचना** – चेहरे और शरीर को सजाने के लिए मेकअप और प्रसाधनों का उपयोग करना। 4. **संजीव** – मंच पर काल्पनिक वस्तुओं या जानवरों को प्रस्तुत करना, जैसे साँप, पक्षी या चार पैरों वाले जीव।	
10.	**रस निष्पत्ति** जब किसी विभाव के कारण स्थायी भाव (Sthayi Bhava) को अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है और उसमें संचारी भाव मिलते हैं, जो सात्त्विक भावों के रूप में खिलते हैं, और अभिनय के द्वारा व्यक्त किए जाते हैं, तब दर्शकों में **रस** की अनुभूति होती है। यह किसी भी नृत्य प्रदर्शन का अंतिम लक्ष्य होता है, ताकि दर्शक भाव को महसूस कर सकें। **या** दृष्टि भेद (आँखों की गतियाँ) और उनके नाम संस्कृत में "दृष्टि" का अर्थ "आँखें" होता है। विभिन्न भावों को प्रकट करने के लिए 8 प्रकार की आँखों की गतियाँ होती हैं: 1. **समं** – आँखों को स्थिर रखना। 2. **अलोकितं** – आँखों को गोल घुमाना। 3. **साची** – आँखों के कोनों से देखना। 4. **प्रलोकितं** – आँखों को एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाना। 5. **निमीलितं** – आधी बंद आँखें, पुतलियों को हृदय की ओर केंद्रित करना। 6. **उल्लोकितं** – ऊपर की ओर देखना। 7. **अनुवृत्तं** – आँखों को तेजी से ऊपर-नीचे हिलाना। 8. **अवलोकितं** – नीचे की ओर देखना।	2
11.	उत्संग हस्त मुद्रा और उसका उपयोग जब दाएँ और बाएँ हाथों की हथेलियाँ क्रमशः बाएँ और दाएँ कंधे को स्पर्श करती हैं और "मृगशीर्ष" मुद्रा बनती है, तब उसे "उत्संग हस्त" कहा जाता है। **उपयोग:** • आलिंगन (गले लगाना) • शर्म या संकोच व्यक्त करने के लिए • बाजूबंद और अन्य आभूषण दिखाने के लिए	2

	• बच्चों को सिखाने के लिए **या** श्लोक: "सुकुमारं तु लास्यं उद्धतम् तांडवं विदुः।" **लास्य:** यह सौम्यता, कोमलता और सुंदरता से भरा नृत्य होता है, जिसे माँ पार्वती द्वारा प्रस्तुत किया गया था। **तांडव:** यह शक्ति, गति और जोश से भरा हुआ नृत्य होता है, जिसे भगवान शिव द्वारा किया गया था।	
12.	कुचिपुड़ी में प्रस्तुत की जाने वाली नृत्य शैलियाँ 1. रंग पूजा 2. कौत्वम् 3. जतिस्वरम् 4. शब्दम् 5. कीर्तन 6. कृति 7. दरुवु 8. पदम् 9. जावली 10. अष्टपदी 11. तरंगम् 12. तिल्लाना **या** शब्दम् की विशेषताएँ • यह आमतौर पर किसी राजा या देवता की स्तुति में रचा जाता है। • इसमें गीतों के माध्यम से विस्तृत कहानी प्रस्तुत की जाती है। • इसमें लयबद्ध बोलों का प्रयोग होता है, जैसे "तै तत ता तम"। • यह सामान्यतः द्रुत लय (तेज गति) में गाया जाता है।	2
13.	नृत्त, नृत्य और नाट्य में अंतर 1. **नृत्त** – शुद्ध नृत्य, जिसमें केवल शारीरिक गतियाँ होती हैं और कोई भाव प्रकट नहीं किया जाता। 2. **नृत्य** – वह नृत्य जिसमें हाथों, चेहरे और शरीर की मुद्राओं के माध्यम से गीत के अर्थ को प्रस्तुत किया जाता है।	2

	3. **नाट्य** – अभिनय प्रधान नृत्य जिसमें संवाद, हावभाव और नाटकीयता शामिल होती है। **या** नाट्यधर्मी और लोकधर्मी 1. **नाट्यधर्मी** – यह नाटकीय प्रदर्शन होता है, जिसमें इशारों, प्रतीकों और पारंपरिक नृत्य शैलियों का उपयोग किया जाता है। 2. **लोकधर्मी** – यह वास्तविक जीवन पर आधारित नृत्य होता है, जिसमें मनुष्य के स्वाभाविक हावभाव और भावनाओं को सहज रूप से प्रस्तुत किया जाता है।	
	खंड-ग	
14.	अष्टविध नायिका अवस्थाएँ नाट्यशास्त्र में नायिकाओं की आठ अवस्थाएँ बताई गई हैं: नाट्यशास्त्र में वर्णित नायिकाएँ नाट्यशास्त्र में नायिकाओं को विभिन्न अवस्थाओं में वर्णित किया गया है, जो उनके प्रेम और मानसिक स्थिति को दर्शाती हैं: 1. वासकसज्जिता (Vasakasajjita) – वह नायिका जो अपने प्रियतम के आगमन की प्रतीक्षा कर रही होती है और स्वयं को उनके स्वागत के लिए श्रृंगार करती है। 2. विरहोत्कंठिता (Virahotkanthita) – वह नायिका जो अपने प्रियतम के ना आने से दुखी और व्याकुल होती है। 3. स्वाधीनपतिका (Swadinapatika) – वह नायिका जिसे सौभाग्य प्राप्त है कि उसका प्रियतम सदैव उसके साथ रहता है और उसके प्रति पूर्णतः समर्पित रहता है। 4. विप्रलब्धा (Vipralabdha) – वह नायिका जिसे प्रियतम द्वारा धोखा मिला है और जो उनके वचनों या वादों से ठगी हुई महसूस करती है। **5. कलहान्तरिता नायिका (**Kalahantharita Nayika) **- कलहान्तरिता वह नायिका होती है जो अपने प्रियतम से किसी कारणवश झगड़ा करती है, लेकिन बाद में पछतावा महसूस करती है और उसे मनाने की इच्छा रखती है।** 6. खंडिता (Khandita) – वह नायिका जो अपने प्रियतम से क्रोधित है, क्योंकि उसने किसी और महिला से संबंध बना लिया है। 7. प्रोषितपतिका (Prositapatika) – वह नायिका जो अपने प्रियतम के दूर जाने के कारण अकेली और उदास महसूस करती है। **8.** अभिसारिका (Abhisarika) – वह नायिका जो छिपकर, चुपचाप अपने प्रियतम से मिलने जाती है, चाहे समाज इसे स्वीकार करे या नहीं।	6

	या **भामाकलापम** भामाकलापम एक **श्रृंगार काव्य** है, जिसे **सिद्धेंद्र योगी** (11वीं-14वीं शताब्दी) ने लिखा था। • यह नृत्य, संगीत और ताल शास्त्र का सुंदर संयोग है। • इसमें **सत्यभामा** को नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो श्रीकृष्ण के प्रति गहरी प्रेम भावना रखती हैं। • इसमें **मधुर भक्ति** को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें जीवात्मा (सत्यभामा) परमात्मा (श्रीकृष्ण) से मिलने के लिए तड़पती है। • इसमें **नवरस** और **अष्टनायिका अवस्थाएँ** भी शामिल हैं।	
15.	चतुर्विध अभिनय 1. **आंगिक अभिनय** – शरीर की मुद्राओं और हावभाव से भाव प्रकट करना। 2. **वाचिक अभिनय** – संवादों और संगीत के माध्यम से भाव प्रकट करना। 3. **आहार्य अभिनय** – पोशाक, आभूषण और मंच-सज्जा के माध्यम से भाव प्रकट करना। 4. **सात्त्विक अभिनय** – हृदय से उत्पन्न होने वाले वास्तविक भाव, जैसे आँखों से आँसू आना, चेहरे पर प्रसन्नता या उदासी झलकना। **या** जयदेव की अष्टपदी **अष्टपदी** संस्कृत में रचित भक्ति काव्य का एक संग्रह है, जिसे **जयदेव** ने **12वीं शताब्दी** में अपनी प्रसिद्ध काव्य रचना **"गीत गोविंदम"** में लिखा था। ये भजन **श्रीकृष्ण, राधा और गोपियों** के प्रेम तथा श्रीकृष्ण की सुंदरता का वर्णन करते हैं। अष्टपदी क्या है? • "अष्टपदी" शब्द का अर्थ है **"आठ चरणों में रचित गीत"**। • प्रत्येक अष्टपदी **आठ दोहों (couplets) या आठ पदों** से बनी होती है। • ये भजन **गीत गोविंदम** ग्रंथ का हिस्सा हैं, जो **12 अध्यायों** और **24 प्रबंधों (Prabandha)** में विभाजित है। • प्रत्येक प्रबंध में **आठ-दोहों का एक समूह** होता है, जिसे **अष्टपदी** कहा जाता है।	6